ISSN:2583-8849



डॉ. नितिन मेनारिया
जे-46, हरिदास जी की मगरी, उदयपुर

जिन्दगी में उम्र के ढलान पर

जिन्दगी में उम्र के ढलान पर
सपने कुछ नये बुन रहे है
वक्त की सीमा ज्ञात नहीं
हर वक्त को खूब जी रहे है।

सुख और दूःख के सामंजस्य पर
दूःखों को याद कर रहे है
सुख की मंजिल पता नहीं
सच्चे रास्ते पर चल रहे है।

इस दूनिया के दस्तूर पर
कर्तव्यों को पूरा कर रहे है
अधिकारों का ज्ञान नहीं
भरोसे के साथ यूंही चल रहे है।

उम्र के पैमाने पर
सबकी उम्र के माप बढ़ रहे है
छोटो की उम्र स्थिर क्यों है
हमारी उम्र के पैमाने ही बढ़ रहे है।

जीवन की ऊचाँइयों पर
जाना सभी चाह रहे है
फिर कोई क्यों अनदेखा करें
कुछ चूनिंदा में ही जोश भर रहे है।

जीवन की समय सीमा पर
एक निश्चित दूरी है
फिर क्यों मोह में रहना
कर्म को ही चून आगे बढ़ रहे है।